Navchetana Homilies

July 14, 2019

Dt 4:1-8

Is 2:1-5

1Cor 10:23-31

Lk 12:57-13:5

प्रेरित काल का छटवाँ रविवार

फलहीन वृक्ष

मेरा एक पुराना परिचित मिलने आया। वह अपनी व्यथा–कथा सुना रहा था। कुछ साल पहले उसका बेटा वाहन दुर्घटना में मर गया था। अब उसकी पत्नी बीमार है– कैन्सर से पीड़ित, उसके साथ आर्थिक परेशानियाँ। सब कुछ बताने के बाद उसने कहा– "पता नहीं, ईश्वर मेरे किस पाप की सजा मुझे दे रहा हैं?"

विपत्तियाँ हर एक की जिन्दगी में आती है, और यह आम बात है कि लोग इन विपत्तियों को ईश्वर की सजा के रूप में देखते हैं। ऐसी ही बात कुछ लोग येसु से कर रहे थे। कुछ गलीलियों को पीलातुस ने मार डाला था। लोगों के प्रश्न और उनके मन के विचारों को समझकर जवाब देने के बदले येसु उनसे पूछते हैं– "क्या तुम समझते हो कि ये गलीलि अन्य सब गलीलियों से अधिक पापी थे?" उसने एक और उदाहरण दिया– सिलोआम की मीनार गिरने से अठारह लोग दब गये थे। येसु उनसे पूछते हैं–"क्या ये अठारह लोग

येरूसलेम के सब निवासियों से अधिक पापी थे?" और जवाब में कहते हैं– "मैं तुमसे कहता हूँ, ऐसा नहीं हैं।" उसके साथ ही उन्होंने कहा कि जो समय तुम्हें दिया गया है, जो साधन तुम्हें उपलब्ध है, जो क्षमता तुम्हारे पास है, उससे अधिक फल उत्पन्न करो। नहीं तो तुम भी नष्ट हो जाओगे।

अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए प्रभु येसु ने अंजीर के पेड़ का दृष्टांत सुनाया। फिलिस्तीन में बहुत अधिक पाया जाने वाला वृक्ष है, अंजीर का पेड़। किसी भी प्रकार की मिट्टी में क्यों न हो वह बड़ा होकर बहुत–सा फल देता है। दृष्टांत में परामर्शित यह अंजीर का वृक्ष बहुत ही लाभदायक स्थान पर स्थित है। पहले पहल यह दाखबाड़ी में लगाया गया था। जिसकी जमीन ऊर्वर और उपजाऊ थी। उसे अपने मालिक द्वारा पानी और खाद निरंतर मिल जाता था। अंजीर पेड़ के बड़े होने पर भी तीन साल से लगातार दाखबाड़ी का मालिक उससे फल पाने की आशा कर रहा था, लेकिन उसे अभी तक कोई फल नहीं मिला। अंत में निराश होकर उसने मजदूरों से कहा उसे काट डालो। परन्तु माली के विशेष आग्रह पर उसे एक और मौका दिया गया। फिर भी यदि आगे आने वाले समय में उसने फल नहीं दिया तो मालिक ने पेड़ कटवाँ डालने का निश्चय कर लिया था। अंजीर के पेड़ ने आस–पास के जमीन से बहुत कुछ ग्रहण किया था। वह पेड़ बड़ा हो गया। उसने जमीन से जितना ग्रहण किया था उतना भी फल के रूप में नहीं दिया या बिल्कुल ही नहीं दिया। इसी प्रकार की एक घटना हम संत मत्ती के सुसमाचार में भी वर्णित देखते हैं। एक अच्छे अंजीर के पेड़ को देखकर येसु फल की आशा से उसके पास गये। उस पत्तेदार पेड़ को देखकर कोई भी व्यक्ति उससे फल

की उम्मीद कर सकता था। लेकिन येसु को उसमें फल नहीं मिला तो उन्होंने उसे शाप दिया और वह तत्काल ही सूख गया। जो लोग सिर्फ अपने लिए ही सब कुछ बटोरते रखते हैं, दूसरों को कुछ नहीं देते उनकी जिन्दगी येसु के अनुसार एक श्रापित पेड़ की तरह ही होती है।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि और कहानीकार मुक्तिबोध की एक बहुचर्चित कहानी है– 'ब्रह्मराक्षस'। उसी नाम से उनकी एक कविता भी है 'ब्रह्मराक्षस'। यह एक ऐसा व्यक्ति है जिसे संसार भर का ज्ञान प्राप्त है। लेकिन उसकी जिन्दगी बड़ी ही श्रापित जिन्दगी है। वी अपनी विद्या और ज्ञान से निर्मित कैद में है। जब तक वह ज्ञान और विद्या को किसी और को नहीं दे देता है उसे उस श्राप से मोचन नहीं मिलता है।

ज्ञान हो, धन–सम्पत्ति हो या सुख–सुविधाएँ हों जो कुछ हम प्राप्त करते हैं उसी अनुपात में यदि हम दूसरों को कुछ नहीं दे पाते तो हमारी भी जिन्दगी एक ब्रह्मराक्षस की जिन्दगी के समान शापित हो जाती है। जब हम कुछ देना शुरू करते है तभी हमें उससे मुक्ति प्राप्त होती है।

'बहते रहने दो' अंग्रेजी कवि हेनरी बेरटन की एक सुन्दर कविता है– पास इट ऑन। हस्तांतरित करो यही पास इट ऑन का अर्थ है। उस कविता की रचना के पीछे एक कहानी है। उसका मित्र और प्रसिद्ध लेखक प्रभाषक मार्क गैपीयेर्स ने उनकी जिन्दगी की एक घटना सुनी। यह घटना इस प्रकार है। युवा गैपीयेर्स अपने स्कूली अध्ययन के बाद हालैण्ड से होयली जा रहा था। जहाज के कैंटीन से उसने खूब उच्छा भोजन खाया। जब भोजन का बिल आया तब उसे मालूम हुआ कि उतना पैसा उसकी जेब में नहीं है।

कैंटीन के बैरे (वेटर) ने उसे बहुत डाँटा और फटकारा पर जब कैंटीन के बैरे ने उसका नाम पूछा तो उसका सारा गुस्सा ठंडा हो गया। उसने कहा कि वर्षों पहले गेपीयेर्स की माँ ने बहुत बड़ी जरूरत आने पर उसकी मदद की थी। इसलिए उस कैंटीन के बैरे ने अपनी जेब से गैपीयेर्स के बिल को चुकता किया। गैपीयेर्स ने उससे कहा आपका यह एहसान मैं नहीं भूलूँगा। बदले में मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ? तब कैंटीन के बैरे ने कहा "तुम्हारी माँ ने मेरे लिए भलाई की, मैंने वह तुम्हें दे दी। अब तुम यह किसी और को दो जिसे तुम्हारी मदद की जरूरत हो।" यह घटना बेरटन के दिल को गहराई से छू गई। उसने इस घटना से प्रभावित होकर जो कविता लिखी उसका आशय लगभग इस प्रकार है। "करूणा की मधुर किरण ने कभी तुम्हारे लिए एक सुनहरा सबेरा दिया है? तो तुम उसे अपने भाई के लिए भी हस्तांतरित करो। उसकी जिन्दगी में भी नया सबेरा लाओ। दया के अमृत रूपी झरने को कहीं रूकना नहीं चाहिए। उसे निरंतर बहते रहना चाहिए। जब तक धरा पर स्वर्ग का आगमन न हो जाये तब तक दूसरों की आँखों के आँसू धो डालने के लिए उसे बहते रहना चाहिए।" जो जीवन किसी दूसरे के काम नहीं आता वह बेकार और असफल जीवन है। जो वृक्ष फल नहीं देता उसका जन्म असफल है। बाईबिल व्याख्याता विलियम बारकले फलहीन अंजीर के दृष्टांत पर टिप्पणी करते हुए लिखते है। "व्यर्थता और अनुपयोगिता विनाश को निमंत्रण देती है।"

"संसार में तुम्हारी जिन्दगी किस काम की है? उसकी सार्थकता क्या है?" हमसे जब यह सवाल पूछा जायेगा तो

हमारी प्रतिक्रिया क्या होगी? जो सिर्फ लेता है और देता नहीं, वह संसार में बहुत दिन तक टिक नहीं पायेगा।

टैगोर की 'गीतांजलि' के भिखारी की कहानी हम सबको मालूम है। वह भिखारी राजा से बहुत कुछ पाने के लिए रास्ते के किनारे पर खड़ा रहा। यह देखकर उलटे राजा ने पालकी से उतर कर उस भिखारी के सामने हाथ पसारकर उससे कुछ माँगा। उस भिखारी ने अपनी झोली में से एक छोटा सा दाना निकाल कर राजा के हाथ पर रख दिया। शाम को वापस घर लौट कर वह अपनी झोली में क्या देखता है? जो दाना उसने राजा को दिया वह सोने का हो गया। उसे बहुत दुःख हुआ– "हाय, मैं अपनी झोली के पूरे दानों को राजा के हाथों में डाल दिया होता, तो बेहतर था।" बाद में पश्चाताप से क्या लाभ।

अंजीर के पेड़ के दृष्टांत में उस वृक्ष को एक और मौका दिया गया है। यह उसके लिए शायद अंतिम मौका होगा। जैसा कि माली ने कहा था– "मैं इसे और खाद दूँगा। यदि वह अगले वर्ष फल दे, तो अच्छा, नहीं तो इसे काट दूँगा।" ईश्वर हम सबको एक के बाद एक अवसर जरूर देता है। उस अवसर का लाभ हम उठा लें, यह हर व्यक्ति पर निर्भर है। इन अवसरों को ठुकराने से ईश्वर की कृपा भी कम हो जाती है। अवसरों के ठुकराने का एक अर्थ यह भी है कि हम अपनी मुक्ति का द्वार सदैव के लिए बंद कर देते हैं। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि त्रिलोचन की कविता संग्रह 'धरती' की एक कविता में वे कहते हैं–

"अभी तुम्हारी शक्ति शेष है

अभी तुम्हारी सांस शेष है

अभी तुम्हारा कार्य शेष है

मत अलसाओ

मत चुप बैठो

तुम्हें पुकार रहा है कोई”

ईश्वर ने जो ऊर्जा, ताप, शक्ति और क्षमता आपको प्रदान की है उसे दूसरों की भलाई में लगाओ। अभी जीवन में अनेकों ऐसे अवसर आएंगे जब आपको आगे आकर दूसरों की सेवा करनी होगी। फलहीन वृक्ष जैसी जिन्दगी विनाश का निमंत्रण है।

Fr. James ML CMI